SHUBHKRITI
(WWW.RAVINDERRAVI.COM)
1410/SECTOR 3, KKR HARYANA-136131
RAVINDER RAVI

# Shubhkirti

(A monthly magazine dedicated to the daughters of Haryana)

VOLUME I, ISSUE I OCTOBER 2012

THIS ISSUE

**आभिभावक : कर्तव्य और भावनाओं के समक्ष**

- Derna: A place of natural spring in Libya
- Indo-Pak Mushaira at SD College in Ambala
- Fitrat– a poem by Ravinder "Ravi"
- Fair's Fair : A Womanhood (A poem dedicated to girls of Haryana)
- Call for papers for Alchemist Journal of Humanities
- Helplessness on Corruption

# आभिभावक :कर्तव्य और भावनाओं के समक्ष

**आभिभावक :कर्तव्य और भावनाओं के समक्ष**

अभिभावकों को भावानओ और कर्तव्य मे एक सामञ्जसय रखने के लिए एक अंतर्द्वंद के तहत अपने कर्त्वयों को महत्त्वहीन कर देना एक आम चलन सा हो गया है| बच्चों की आवश्कतायें पूरी करते हुये , हमे अपनी भावनाओ पर नियत्रन्न करना भी सीखना चाहिए| आज की भाग-दोड़ वाले जीवन मे बच्चों के सुनहरे भविष्य के लिए , माता-पिता , दिन-रात अपने मन को मसोम कर बच्चों की आवश्कतायें पूरी करने मे लगे हैं| यह एक बड़ा प्रश्न है कि हमारी आवश्कतायें क्या है? क्या यह एक सामाजिक'-दबाव हेतू पूर्ण की गई पूर्ति है| या 'इस आवशकता' कि वास्तविकता मे जरूरत थी! प्राय: यह देखा गया है कि आभिभावक अपने भूतकाल से बच्चों
के वर्तमान को मिलाने का प्रयास करते हैं | इस प्रयास की खाई इतनी गहरी और अंधेरी होती है कि हम लोग इस अन्धेरे मे कहीं गुम से हो जाते हैं | उदाहरण के लिए , यदि आभिभावक एक सफल व्यक्ति है , तो वह
अपने संघर्ष के किस्से अपने बच्चों के सामने रखते हैं | क्या आज की पीड़ी उस भूतकाल को वर्तमान से जोड़ कर देख सकती है ? शायद नहीं| इस तरह के किस्से यदि बच्चों का साकारात्मक विकास कर रही है , तो यह एक उपयोगी प्रोयोग सिद्ध हो सकता है| ओर यही किस्सा , यदि बच्चों के लिए हास्यस्प्द है तो उनके मूल्यों को दोबारा से देखने की अति आवशकता है |

## संस्कार , मूल्य और सदाचार

क्या है ? क्या ये सभी समय के साथ-साथ अपने सही अर्थो को किसी बदलाव कि ओर इंगीत तो नही करते ? यह पूर्ण रूप से संदर्भिय है | इन शब्दों के अर्थ इनके स्थानों के साथ-साथ बदलते रहते हैं | यह , यहाँ इसलिए प्रासांगिक है क्योंकि आभिभावक एक 'संघात्मक' रूप मे बड़ी परिभाषा है| व्यवसायी, शिक्षक, इंजीनियर, डाक्टर और अलग-अलग वयवसायी धारियों के लिए संस्कार , मूल्य और सदाचार जैसे शब्दों के मायने भी अलग हैं | यह अप्रासंगिक नहीं होगा कि समाज मे अनेक वर्गो के लिए शब्दों के अर्थ भी अलग होते हैं|

यदि हम समाज को तीन मुख्य रूपों में विभाजित करें तो मूल्यों के अर्थ भी कुछ इस तरह होंगे| उच्चवर्गीय समाज की इकाई में और मध्यवर्गीय समाज की इकाई में, बच्चों के लिए , मूल्यों कि परिभाषा भी विभिन्न हो जाना स्वाभाविक ही है | यह एक प्रामाणिक तथ्य है कि जहां उच्चवर्गीय बच्चे गर्मीयों की छुटटिया मनाने के लिए यूरोप , अमेरिका जैसे देशों में जाते हैं, वहीं दूसरे वर्गो के बच्चे अपने ही नजदीकी स्थानों पर जाकर खुश हो जाते हैं| इसी तरह सदाचार, मूल्य और संकार बदलेते रहते हैं| जिस आयु मे इन मूल्यों का बच्चों में प्रादुर्भाव होता है, उस क्षण अभिभावक , उनसे दूर रहते हैं| जैसे कि बच्चों का विधालय में बिताया गया समय | घर में मन लगे , इसीलिए आभिभावक अपने बच्चों को नयी-नयी , वस्तुएँ ला कर देते हैं | संगणक , टेलिविजन , वीडियो गेम और भी कई तरह के उपकरण | कई बार , देखा गया है कि मटा-पिता , अपने समय के लिए , बच्चों को टेलिविजन देखने के लिए भी उकसाते हैं यहीं से भावनाओ और कर्तव्यों के बीच युद्ध शुरू हो जाता है | आज कल , भ्रमण-भाष (मोबाइल) का प्रचलन है| लेकिन इन नई तकनीकों के बीच हम कैसे सामञ्ज्स्य स्थापित करें यह एक दूरगामी तकनीक है | बच्चों की पसंद और नापसंद में एक तुलनात्मक अध्यन्न होना अति आवश्यक है | बच्चों को आज्ञाकारी बनाने के लिए , विवेक को विकसित करना ओर उनके अंतकरण से सही और गलत कि परख करवाना भी एक हमारा दयितव्व ही नहीं अपीतू कर्तव्य भी है | घर के कार्यो मे रुचि बड़े | इस दिशा मे माता-पिता को उनके रुचिकर कार्यों पर ध्यान देना पड़ेगा ताकि बच्चों मे एक भोतिक-श्रम करने का विश्वास पैदा हो | यह कोई सूचीगत नहीं है कि - बिस्तर बनाना , बागीचे में पानी देना , टेबल ठीक करना इत्यादि | इस संदर्भ मे किसी अभिभावक की भावना को ठेस पहुँच सकती है कि जब घर में आया है तो बच्चे इस काम को क्यों करें | एक बार अमेरीकन राष्ट्रपति , अब्राहम लिंकन से किसी ने पूच्छा कि ***" आप अपने बूट , स्वंय पालिश करते हैं ? लिंकन ने जवाब दिया कि " क्यों? आप , क्या किसी और के बूट पोलिश करते हैं" ?*** माता-पिता अपनी भावनाओं का आंकलन करते हुये कर्तव्य को भी महत्व दें | उम्र के कुछ पड़ाव तक बच्चा अपने माता-पिता का प्रतिबिंब होता है| कुछ समय के पश्चात , बच्चा , विवेक शील होने लगता है | उसे सही और गलत कि परख हो जाती है | बच्चों में समाज के प्रति स्वनदेलशीलता सिखाने के लिए , बच्चों को अपने साथ सामाजिक कार्यो मे साथ ले जाएँ | हमे चाहिए कि हम बच्चों के गुणो को प्रोतसाहित करें , उनके द्वारा अर्जित इनाम को सहेज कर रखे | बच्चे अपनों से छोटो से कैसे बर्ताव करे , यह एक उदाहरण के तोर पर उन्हे समझाएँ | यदि आभिभावक , अपने कर्तव्य और भावना मे इक साम्ज्सय स्थापित कर लें और इस समाज , देश और विश्व को एक अपने बच्चे के रूप में , एक नायाब उपहार दें। ***डॉ अब्दुल कलाम कहते हैं कि " एक युवा का जागृत मस्तिष्क, सबसे ज्यादा शक्तिशाली संसाधन है , इस धरा के ऊपर ही नहीं बल्कि इस धरा के नीचे भी "***

# Derna– A place of natural spring in Libya

*Well, Libya is in news for last one and half years, anything comes across about this country makes me nostalgic for my collections of photos that i captured during my stay of 5 years there. From the bag of Gifts , like Jhunoo ka Baba (one charact... er from old Indian Tales who carries a bag that is full of stories) (Remember DD1 as ready Reference),each photo has its own story of amazing journey of ingenuity of seeing sights from the perspective of Indian Lecturer in North African country. Lecturers at university enjoyed a respect in this tribal community where everything moves with WAASTA (recommendations of relationship).*

*Talking about this picture , this is a picture of waterfall about 50 km away from the city in the natural surroundings of mountains. Derna is an eastern city of Libya, full of greenery, lovely sights, and of course people. People from this place is more beautiful and courageous, this city played a great role in this revolution , From Benghazi to Tobruk, this belt had a long story of having rebel against Qathafi's reign.*

*Ravi Travels*

# Indo-Pak Mushaira at SD College Ambala

*AMBALA: After a long wait of nearly 13 years, Ambala once again reverberated with some delightful poetry by renowned Urdu and Hindi poets at a "mushaira," -- "Karvan -e-adab" -- here late on Sunday evening.*

*Around a dozen poets from India and Pakistan including Gopal Das Neeraj, Surjit Patar, Rahat Indori, Munnawar Rana and Kishwar Naheed participated.*

*The "mushaira" was organized by the Haryana Institute of Fine Arts with a view to strengthen Indio-Pak relations. Poets from both the countries also made a passionate written appeal to strengthen ties between the two countries, to the Prime Ministers of India and Pakistan through Union culture minister Kumari Selja, who was the chief guest at the event.*

*"We have appealed to start constructive efforts to strengthen the cultural ties between the two nations by introducing a liberal visa agreement, especially for artistes of both the nations, including multi-entry and non-police reporting visa. We have also mooted for common celebrations of Independence Day of both the nations," said Pakistan-based poet Munnawar Rana. (Courtesy Times of India)*

**Ravinder Ravi with The Living Legend in the field of Urdu Shayari Janab Dr Rahat Indori Saheb ji at Indo-Pak Mushaira in Ambala**

फ़ितरत

न धूल , न पत्ता , न तिनका हैं,
जो चले आंधी तो उडा ले जाएं ।।
रुख तूफ़ानो के मोड देते हैं,
हम ऎसे आदमजात नही जो बदल जाएं ॥
निगाहों में निगाहें डालकर बात करते हैं,
हम वो नही जो आंखें चुराकर निकल जाएं ॥
वो क्या , जो दिल ओर जुबां में फ़र्क रखतें हैं,
वो चाहें तो ये दिल भी अपना बना ले जाएं ॥
महेमान नवाजी मे, आंसू ही परोस देते हैं ,
गरीबखाने आइये हमारे,और मोती ले जाएं ॥
हर एक बात में वो दर्द ए दिल ही देते हैं,
और हम, अपने हिस्से की मरहम भी उन्हे दे आये ।।
मंजिल तक साथ निभाने का वादा खिलाफ़ी करते हैं,
इन्तजार में उनकी मील का पत्थर जो हम बन गये ॥

**रवीन्द्र कुमार "रवि"**

## *Fair's Fair : The Womanhood*

**Inception of Being,**
**How 'fair' was I?**
**Through the canals of un known paths**
**Reached to the bed of "flesh-well"**
**Seeing, - identity of sex - within fair-sex,**
**How "abundant" was I?**
**Finding the place for resting**
**Perhaps known to HER,**
**Not to find moment to nap after**
**Coming out of the shell,**
**Trying to remain within,**
**Don't leave my Being**
**Let me be within you,**
**How "secure" was I?**

**Ravinder "Ravi"**

www.ravinderravi.com
AJH (Alchemist Journal of Humanities)

Ravinder Kumar
Alchemist Journal of Humanities
H.N. 1410, Sector 3, Urban Estate ,
kurukshetra, Haryana –136131 (India)
Phone: 0091 720 6568548
E-mail: alchemisttutorials@gmail.com

Alchemist Journal of Humanities (AJH)

Interestingly, contemporary studies, including literary studies, study of dalit-literature, subaltern literary theory, women studies, cross-cultural studies, and other innovative ideas related to interdisciplinary subjects are being installed into the syllabi of Universities across the country. Research is becoming more demanding and publishing of research papers during PhD course have become integral part to validate the originality of work. Keeping this in the mind, here ***AJH*** will provide an opportunity to budding scholars to publish their research papers on monthly peered review journal.

Alchemist Journal of Humanities

Www.ravinderravi.com

# Helplessness on Corruption

Helplessness on Corruption

The famous businessman Azim Premji, recipient of Padam Vibhushan (Indian National Award) of last year expressed his disappointment on the present Indian administrative system at the ongoing world economic forum in Davos of Switzerland. It is needed to go deeper in this regard.

His remark is mentionable enough to describe that Indian administration has failed. The most dangerous example came into light recently on the eve of Republic Day near Mannmad of Malegoan in Maharastra, where a dedicated & honest officer had to sacrifice his life in order to discharging of his duties. Oil Mafia burnt him alive by pouring with kerosene, when Additional Commissioner, Mr. Yasgwant Sonawane tried to stop them adulteration to oil from government tankers.

What else, a heinous crime and challenge can be thrown on the face of Indian democracy? Sonawane was at the target of oil mafia for a long time. At last he met with same fate as it happened with Sales officer-Shangun Manjunath-of Indian Oil, while taking action against corruption of petrol pumps of Uttar Pradesh in 2005 and little before this, Er Stynedra Nath Dubey was killed by mafia when he raised his voice against them in Golden Quadrilateral Road Project's hanky-panky.

What have been revealed by these incidents? It tells about the network of corruption and organised crime that action taken against them is really life threatening.

This is burning question. Why Maharastra Goverenment has wakened up then? Had this action been taken before, Sonawane's life could have saved. Disappointment of Azim ji indicates to the worst situation of Indian administration. Now, we can ignore all this only at the cost of wide-interests of nation by sacrificing them.

Ravinder Kumar "Ravi"